अध्याय 4

एस्तेर से मोर्दकै का निवेदन

राजाज्ञा के प्रकाशित होने के बाद, कि बारहवें महीने के तेरहवें दिन यहूदियों को मारा जाना था, यहूदियों का भविष्य अंधकारमय लग रहा था। परन्तु, परमेश्वर ने एक मार्ग तैयार करा था जिससे राष्ट्र को बचाया जा सकता था। अध्याय 4 का आरंभ यहूदियों द्वारा उस मार्ग को जानने और विनाश से बचने के लिए उसका उपयोग करने की कहानी से होता है।

मोर्दकै का शोक (4:1-3)

**1जब मोर्दकै ने जान लिया कि क्या क्या किया गया है तब मोर्दकै वस्त्र फाड़,
टाट पहिन, राख डालकर, नगर के मध्य जाकर ऊँचे और दु:खभरे शब्द से
चिल्लाने लगा; 2और वह राजभवन के फाटक के सामने पहुँचा, परन्तु टाट पहिने
हुए राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने की आज्ञा न थी। 3एक एक
प्रान्त में, जहाँ जहाँ राजा की आज्ञा और नियम पहुँचा, वहाँ वहाँ यहूदी बड़ा
विलाप करने और उपवास करने और रोने पीटने लगे; वरन् बहुतेरे टाट पहिने
और राख डाले हुए पड़े रहे।**

यह जानने के पश्चात कि यहूदियों का संहार होना है, मोर्दकै ने, साम्राज्य के सभी यहूदियों के साथ शोक मनाया।

आयत 1. मोर्दकै ने ***क्या क्या* किया गया है** कैसे जाना (बल दिया गया है)? उदाहरण के लिए, यह कि जब यहूदी मारे जाएँगे, तो राजा को दस हज़ार किक्कार चांदी मिलेगी (3:9; 4:7), प्रकाशित की गई राजाज्ञा में निश्चित नहीं बताया गया था। संभव है कि उसके पास राज-भवन में अपने स्रोत हों जो उसे वह जानकारी देते थे जो सार्वजनिक नहीं थी। संभव है कि कुछ यहूदियों ने, जो राजा के सेवक होकर कार्य करते थे, मोर्दकै को, यहूदी समुदाय का एक अगुवा होने के कारण, बताया कि राज-भवन में क्या हो रहा है। एक अन्य विचार है कि नगर के द्वार पर बैठे हुए उसने यह जानकारी अनायास ही सुन ली (देखें 2:19-23)।

राजाज्ञा के प्रत्युत्तर में, **मोर्दकै वस्त्र फाड़, टाट पहिन, राख डालकर ... ऊँचे और दु:खभरे शब्द से चिल्लाने लगा।** ये सभी कार्य शोक और विलाप के सूचक थे। अपने "कपड़े" फाड़ना गहरी भावनाओं को व्यक्त करता था, बहुधा जो व्यक्तिगत हानि या त्रासदी के कारण हुई हो (उत्पत्ति 37:29, 34; यहोशू 7:6; न्यायियों

11:35; 2 शमूएल 1:11)। लोगों द्वारा टाट पहिनना, और राख डालना पश्चाताप करने का चिन्ह था, किसी बड़े विनाश के पूर्वानुमान के समय में, और जब मृत्यु के कारण शोक किया जा रहा हो (2 शमूएल 3:31; यिर्म. 6:26; दानिय्येल 9:3; योना 3:6)।[1]

फारसियों के लिए भी यह पारंपरिक था कि वे शोक के चिन्ह के रूप में अपने कपड़े फाड़ें और दुःख भरे शब्द के साथ विलाप करें। हेरोडेटस ने बताया कि शूशन के लोगों ने ऐसा किया था जब उन्होंने सुना कि फारसी सेना को सलामिस में यूनानियों ने पराजित कर दिया है, 480 ई.पू. में।[2] इसलिए मोर्दकै का व्यवहार शूशन की सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप था।[3]

आयत 2. मोर्दकै ने अपने शोक के व्यवहार को अपने घर के एकांत में सीमित नहीं रखा। वरन, वह "नगर के चौक" (4:6), में गया, जो **राजभवन के फाटक** के सामने था। इस सार्वजनिक प्रदर्शन के द्वारा, संभवतः वह रानी एस्तेर का ध्यान आकर्षित करना चाह रहा था।[4] परन्तु मोर्दकै भीतर जाने से रुका रहा क्योंकि **टाट पहिने हुए राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने की आज्ञा न थी**। एंथोनी टोमासिनो का विचार था कि "फारसी सम्राटों की स्वयं के प्रति आसक्ति को जानते हुए, यह उनके व्यवहार के अनुरूप था कि वे अपनी प्रजा के किसी व्यक्ति को उनपर शोक थोपने नहीं देते।"[5] इस व्याख्या को राजा अर्तक्षत्र के सामने शोक मुद्रा दिखाने के कारण नहेम्याह के भय से समर्थन मिलता है (नहेम्य. 2:1, 2)।

आयत 3. केवल अकेले मोर्दकै ने ही शोक नहीं किया। उसके शोक की हज़ारों अन्य **यहूदियों** के द्वारा भी पुनः आवृत्ति की गई, वे भी **बड़ा विलाप करने और उपवास करने और रोने पीटने लगे; वरन् बहुतेरे टाट पहिने और राख डाले हुए पड़े रहे**। इस समय तक जिस राजाज्ञा का पिछले अध्याय में वर्णन किया गया है, उसे शूशन में सभी स्थानों पर प्रकाशित कर दिया गया था। लेखक ने 3:15 में कहा था कि नगर में इस विषय में घबराहट का वातावरण था। यह समाचार दूर नगरों तक फैल रहा था। परमेश्वर के सभी लोग, साम्राज्य के **एक एक प्रान्त में**, उसके शोक में सम्मिलित हुए।

मोर्दकै के प्रति एस्तेर की चिन्ता और उसका उत्तर (4:4-8)

4एस्तेर रानी की सहेलियों और खोजों ने जाकर उसको बता दिया, तब रानी शोक से भर गई; और मोर्दकै के पास वस्त्र भेजकर यह कहलाया कि टाट उतारकर इन्हें पहिन ले, परन्तु उसने उन्हें न लिया। 5तब एस्तेर ने राजा के खोजों में से हताक को जिसे राजा ने उसके पास रहने को ठहराया था, बुलवाकर आज्ञा दी कि मोर्दकै के पास जाकर मालूम कर ले कि क्या बात है, और इसका क्या कारण है। 6तब हताक नगर के उस चौक में, जो राजभवन के फाटक के सामने था, मोर्दकै के पास निकल गया। 7मोर्दकै ने उसको सब कुछ बता दिया कि मेरे ऊपर क्या क्या बीता है, और हामान ने यहूदियों का नाश करने की अनुमति पाने के लिये राजभण्डार में कितनी चाँदी भर देने का वचन दिया है,

यह भी ठीक ठीक बतला दिया। [8]फिर यहूदियों का विनाश करने की जो आज्ञा शूशन में दी गई थी, उसकी एक नकल भी उसने हताक के हाथ में, एस्तेर को दिखाने के लिये दी, और उसे सब हाल बताने, और यह आज्ञा देने को कहा, कि भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के लिये गिड़गिड़ाकर विनती करे।

जब मोर्दकै का शोक एस्तेर के ध्यान में आया, तो उसने मोर्दकै के लिए कुछ करने का प्रयास किया। तब मोर्दकै ने उसे हामान के षड्यंत्र के विषय में जानकारी भेजी और उससे कहा कि वह यहूदियों के पक्ष में राजा के सामने हस्तक्षेप करे।

आयत 4. जो **एस्तेर** की सेवा करते थे उन्होंने उसे मोर्दकै के सार्वजनिक शोक प्रदर्शन के विषय **बता दिया**। प्रकट है कि वे मोर्दकै के साथ उसके संबंध के विषय कुछ जानते थे; संभव है कि, उसके लगभग पाँच वर्ष के शासन में, उन दोनों के मध्य एक से दूसरे को अनेकों सन्देश लिए-दिए हों। (जैसा 2:11 से संकेत मिलता है, **मोर्दकै** अपनी दत्तक पुत्री के निकट रहने का प्रयास करता रहता था।) उसके हाल को सुनने के पश्चात, एस्तेर **शोक से भर गई**। यहाँ इब्रानी शब्द (חוּל, *कूल* से) का अर्थ होता है "भय के मारे ऐंठना।"[6]

एस्तेर क्यों भावनात्मक रीति से इतनी परेशान हुई? मोर्दकै का सार्वजनिक प्रदर्शन के साथ यह तथ्य कि एस्तेर के साथ उसका संबंध विदित होने की संभावना थी, जिससे प्रगट हो जाता कि एस्तेर भी यहूदी थी; और संभवतः वह इसे गुप्त रखना चाहती हो।[7] परन्तु यह अधिक संभव प्रतीत होता है कि वह इसलिए परेशान थे क्योंकि उसका चचेरा भाई/दत्तक पिता परेशान था; उसका दुःख भरा विलाप एस्तेर के सहने से बाहर था।

एस्तेर ने मोर्दकै के पास (नए) **वस्त्र भेजकर**, इस अभिप्राय से कि "वह टाट उतारकर उन्हें पहन ले। और अधिक शोकित न हो; नए वस्त्र पहन ले, और प्रसन्न होने का प्रयास कर।" यह भी संभव है कि एस्तेर ने मोर्दकै को नए वस्त्र इसलिए भेजे कि वह भिन्न वस्त्र पहन ले जिससे उसे राजभवन के द्वार के अन्दर आने की अनुमति मिल सके। उस स्थिति में, वह उसे सांत्वना दे सकती थी, और हो सकता था कि उसकी चिंताओं के विषय में उससे आमने-सामने बात भी कर लेती।[8]

स्पष्ट है कि एस्तेर ने यह नहीं समझा था कि मोर्दकै क्यों शोकित था। उसने एस्तेर के उपहार ठुकरा दिए, मानो कह रहा हो, "मैं शोक करना बन्द नहीं करूँगा। कुछ बहुत गलत हो रहा है, और मुझे अपना शोक व्यक्त करना है।" प्रत्यक्ष है कि मोर्दकै का उद्देश्य था कि एस्तेर को बोध हो कि यहूदी खतरे में थे और उन्हें बचाने के लिए उसकी सहायता की आवश्यकता होगी।

आयत 5. एस्तेर को पता चल गया। कुछ बहुत गंभीरता सहित गलत था और उसका नए वस्त्रों से समाधान नहीं हो सकता था। इसलिए उसने एक सेवक **हताक** को, जो **राजा के खोजों**, में से था, भेजा कि पता करे कि मोर्दकै इतना शोकित क्यों था। NJPSV कहती है कि एस्तेर ने उसे "मोर्दकै के पास बात का कारण और पूर्ण विवरण जानने के लिए भेजा।" स्पष्ट है कि यद्यपि सारा शूशन राजाज्ञा से परेशान था, एस्तेर उससे अनभिज्ञ थी। प्रतीत होता है कि राजा के रानीवास (हरम) में जो

रहते थे - एस्तेर सहित - उन्हें राजभवन के द्वारों से बाहर के संसार से (संभवतः राजा के हरम के बाहर से भी) पृथक रखा जाता था।

आयतें 6, 7. हताक ने, जिसके नाम का अर्थ है "भला वाला," एस्तेर के द्वारा कहे गई बात को निभाया। वह **नगर के उस चौक** में, गया और **मोर्दकै** को ढूँढा, जिसने **उसको सब कुछ बता दिया कि मेरे ऊपर क्या क्या बीता है** और रानी को यह बताने के लिए कहा। वाक्यांश "मेरे ऊपर क्या क्या बीता है" को कुछ लोग यहूदियों की समस्या को स्वार्थी रीति से कहना समझते हैं, परन्तु ऐसा लगता नहीं है। संभवतः यह अभिव्यक्ति यहूदियों पर आए खतरे की पूरी कथा का परिचय देने की एक विधि है, क्योंकि यह सब उससे आरंभ हुआ था जो मोर्दकै के साथ घटित हुआ। कैरल एम. बैकटेल का विचार था कि "यह निराला वाक्यांश ... सुझाव देता है कि मोर्दकै ने कहानी को बिलकुल आरंभ से बताया, अर्थात उसके हामान के सामने झुकने से इनकार करने से।"[9]

लगता है कि मोर्दकै न केवल राजाज्ञा के विषय जानता था, वरन वह उसमें उसकी भूमिका से, जिसके कारण दुर्जन हामान द्वारा उसे प्रकाशित करवाया गया, भी अवगत था। वह हामान द्वारा राजा को चांदी देने के प्रस्ताव के बारे में भी जानता था।[10] वह कहानी के विवरण के विषय भली-भांति जानकारी रखता था, यद्यपि जो हुआ था उसमें से अधिकांश गुप्त में हुआ था। उसने हताक को **हामान ने** राजा क्षयर्ष को **कितनी चाँदी देने का वचन दिया है, यह भी ठीक ठीक बतला दिया**।

आयत 8. जो वह कह रहा था उसकी पुष्टि करने के लिए, मोर्दकै ने एस्तेर के संदेशवाहक को, उसे दिखाने के लिए, राजा की **आज्ञा** की **एक नकल** भी **दी**। हो सकता है कि वह राजाज्ञा शूशन में सभी के देखने और किसी के द्वारा भी उसकी नकल बनाने के लिए लगाई गई थी। चाहे वह सार्वजनिक रीति से प्रदर्शित नहीं भी की जाती, मोर्दकै के स्रोतों को उसकी एक नकल उपलब्ध करवाने में कोई परेशानी नहीं होती।

मोर्दकै ने **एस्तेर** को सन्देश भेजा कि **भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के लिये गिड़गिड़ाकर विनती करे**। मोर्दकै ने एस्तेर का पालन-पोषण किया था, इसलिए यह उचित लगता है कि वह उसे **यह आज्ञा दे** कि जो वह कह रहा उसे करे, चाहे वह रानी ही थी।[11] एस्तेर की पूछ-ताछ के उत्तर में मोर्दकै यह स्पष्ट कर रहा था कि उसके पास शोक करने के पर्याप्त कारण हैं। उसके सन्देश का मुख्य भाग था कि यहूदी, एस्तेर के लोग, खतरे/मुसीबत में थे; और उसका मानना था कि उन्हें बचाने के लिए वह हस्तक्षेप कर सकती थी और उसे करना चाहिए था।

मोर्दकै की प्रबल याचना (4:9-14)

9तब हताक ने एस्तेर के पास जाकर मोर्दकै की बातें कह सुनाईं। 10तब एस्तेर ने हताक को मोर्दकै से यह कहने की आज्ञा दी, 11"राजा के सब कर्मचारियों, वरन् राजा के प्रान्तों के सब लोगों को भी मालूम है, कि क्या पुरुष

क्या स्त्री, कोई क्यों न हो, जो आज्ञा बिना पाए भीतरी आँगन में राजा के पास जाएगा उसके मार डालने ही की आज्ञा है; केवल जिसकी ओर राजा सोने का राजदण्ड बढ़ाए वही बचता है। परन्तु मैं अब तीस दिन से राजा के पास नहीं बुलाई गई हूँ।" [12]एस्तेर की ये बातें मोर्दकै को सुनाई गईं। [13]तब मोर्दकै ने एस्तेर के पास यह कहला भेजा, "तू मन ही मन यह विचार न कर कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूँगी। [14]क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नष्ट होगी। क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?"

एस्तेर तो "भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के लिये गिड़गिड़ाकर विनती करने" (4:8) में संकोच कर रही थी, मोर्दकै ने उसका मन बदलने के लिए प्रबल, बाध्य करने वाले तर्कों का प्रयोग किया।

आयतें 9-11. हताक ने **मोर्दकै** की बातें रानी को विश्वासयोग्यता के साथ बता दीं (4:9), और उसने उसे उत्तर के **कहने की आज्ञा दी** (4:10)। **एस्तेर** ने पहले अपने पिता समान व्यक्ति के निर्देशों का विरोध किया। उसके आरंभिक प्रतिरोध को स्वार्थ या कायरता नहीं कहना चाहिए; वह तो मात्र अपने जीवन के प्रति चिंता तथा प्रस्तावित अभियान की असफलता की संभावना, दोनों को व्यक्त कर रही थी। साम्राज्य में यह तो सभी जानते थे कि जो भी **आज्ञा बिना पाए भीतरी आँगन में राजा के पास जाएगा** उसके **मार** डाल जाने की ही संभावना है। हेरोडोटस ने ऐसी परंपरा का वर्णन किया, और इसे संभावित हत्यारों से तथा उनसे जो उसका ध्यान राजकीय कार्यों से भटका सकते थे राजा की सुरक्षा करने के लिए बताया।[12] यदि कोई बिना निमंत्रण पाए राजा की उपस्थिति में आ जाता तो उस व्यक्ति का जीवन केवल एक ही बात बचा सकती थी, कि उसकी ओर **राजा सोने का राजदण्ड बढ़ाए** (4:11)।[13] एस्तेर ने जैसा समझा, खतरा यह था कि, संभव था कि राजा उसे देख कर प्रसन्न न हो और उसकी ओर राजदण्ड न बढ़ाए। आखिरकार, एक महीने से वह राजा की संगति में रहने के लिए बुलाई नहीं गई थी। लगता है कि एस्तेर को चिन्ता थी कि उसके प्रति राजा का प्रेम कम न पड़ गया हो,[14] इस कारण हो सकता था कि वह राजा पर इस समय में कोई विशेष प्रभाव न डाल पाती। यहूदियों की सहायता के लिए राजा से विनती करने पर वह मारी जा सकती थी।

आयत 12. एस्तेर की ये बातें मोर्दकै को सुनाई गईं। प्रतीत होता है कि इस समय तक हताक अकेला नहीं रह गया था; उसके साथ एस्तेर के एक या अधिक और सेवक रानी के सन्देश को उसके चचेरे भाई के पास पहुँचाने के लिए गए।

आयतें 13, 14. मोर्दकै ने प्रत्युत्तर में एक और सन्देश दिया। उसने **एस्तेर** को कई और तथ्य देने के द्वारा अन्ततः समझा कर मना लिया:

1. वह भी अन्य यहूदियों के समान खतरे में ही थी; राजभवन में रहने के कारण वह **बची** नहीं रहेगी (4:13)। मोर्दकै ने सोचा होगा कि एस्तेर के यहूदी

होने के विषय में जान लिया गया होगा या **यहूदियों के** संहार के दिन के आने से पहले पता चल जाएगा।

2. यदि एस्तेर यहूदियों की सहायता करने का प्रयास नहीं करती तो **किसी उपाय से छुटकारा और उद्धार हो जाएगा** (4:14)। यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि यह छुटकारा कैसे आएगा। प्राचीन यहूदी स्रोत इस भाषा को “परमेश्वर के लिए अप्रत्यक्ष उध्दरण”[15] समझते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि एस्तेर अपनी भूमिका नहीं निभाती है, परमेश्वर की ओर से छुटकारा फिर भी हो ही जाएगा। बहुत संभावित है कि मोर्दकै अपना विश्वास व्यक्त कर रहा था कि परमेश्वर अपने लोगों का ध्यान करेगा और राष्ट्र को नाश नहीं होने देगा। यह विश्वास अब्राहम से की गई प्रभु की प्रतिज्ञा पर आधारित था, और पितरों के दिनों से लेकर अनेकों बार इसकी पुष्टि हो चुकी थी। किन्तु फिर भी, यदि यहूदियों के लिए छुटकारा किसी अन्य विधि से आता, तो एस्तेर और उसका परिवार संभवतः जीवित नहीं रहने पाते।

मोर्दकै का क्या अभिप्राय था जब उसने कहा कि एस्तेर और उसका घराना **नष्ट** हो जाएँगे यदि यहूदी एस्तेर की सहायता के बिना बचाए जाते? इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर नहीं है। हो सकता है कि मोर्दकै का अभिप्राय था कि परमेश्वर एस्तेर और उसके घराने को दण्ड देगा यदि वे शान्त रहे। क्लेटन विंटर्स का मानना था कि मोर्दकै यह कह रहा था कि “निश्चय ही परमेश्वर के पवित्र लोगों के लिए छुटकारा किसी अन्य स्रोत से अवश्य आएगा, परन्तु वे लोग वाचा के लोगों में से अपना जीवन और विरासत दोनों को खो देंगे”[16] मोर्दकै ऐसे धमकी भरे कथन के प्रति स्वयं चिन्तित रहा होगा, क्योंकि **पिता के घराने** समेत नष्ट होने में वह स्वयं भी सम्मिलित होता!

3. यह संभव है कि एस्तेर को **राजपद** (शब्दार्थ में “राज्य को प्राप्त करना”) **ऐसे ही … समय के लिए** मिला हो (4:14)। मोर्दकै कह रहा था कि एस्तेर को इसे उसके लिए परमेश्वर के उद्देश्य की पूर्ति करने का अवसर समझना चाहिए। इसमें यह विश्वास निहित है कि यह परमेश्वर की ओर से था, न कि भाग्यशाली परिस्थितियों या केवल संयोग, जिससे एस्तेर रानी बनी - और उसने यह होने दिया जिससे परमेश्वर के लोगों के पक्ष में उनके इस कठिन समय में वह राजा के सामने हस्तक्षेप कर सके। मोर्दकै उससे कह रहा था कि यह उसके लिए समय है कि वह परमेश्वर के लिए खड़ी हो और प्रभाव लाए।

राजा के पास जाने का एस्तेर का निर्णय (4:15-17)

15तब एस्तेर ने मोर्दकै के पास यह कहला भेजा, 16”तू जाकर शूशन के सब यहूदियों को इकट्ठा कर, और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ। मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूँगी; और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊँगी; और यदि नष्ट हो गई तो हो गई।” 17तब मोर्दकै चला गया और एस्तेर की आज्ञा के अनुसार ही उसने किया।

मोर्दकै के बाध्य करने वाले तर्कों से कायल होकर, एस्तेर अपने लोगों के लिए राजा के पास जाने को सहमत हो गई।

आयतें 15, 16. एस्तेर को बोध था कि इससे उसके जीवन को खतरा था, इसलिए वह तैयारी करना चाहती थी। उसने यहूदी समुदाय से, जिसका अर्थ है, परमेश्वर से सहायता माँगी। उसने फिर से **मोर्दकै के पास यह कहला भेजा**, उसे निर्देश दिए कि **सब यहूदियों को** कहे कि ... **उपवास करो, तीन दिन रात** तक। उसने कहा कि, राजा के पास जाने से पहले, वह **भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति** से करेगी। उपवास शोक और पश्चाताप का प्रतीक था और उसके साथ प्रार्थना की जाती थी (एज्रा 8:21-23; दानिय्येल 9:3)। एस्तेर के ईश्वरकृत रानी बनाए जाने के विषय मोर्दकै के शब्द तथा एस्तेर द्वारा उपवास रखने का निवेदन, दोनों ही दिखाते हैं कि, यद्यपि इस पुस्तक में परमेश्वर का कहीं उल्लेख नहीं है, किन्तु वह इन घटनाओं में उपस्थित है।[17] यहूदी, मोर्दकै और एस्तेर सहित, प्रभु में विश्वास रखते थे और उसे मनुष्यों के कार्यों पर नियंत्रण करने वाला देखते थे। अन्यथा, एस्तेर यहूदियों से उसके लिए उपवास करने के लिए नहीं कहती।

एस्तेर ने कहा कि उपवास के इस समय के पश्चात, मैं **राजा के पास भीतर जाऊँगी**, चाहे परिणाम जो भी हो। जब उसने कहा, **"यदि नष्ट हो गई तो हो गई"** तो निःसंदेह वह वही व्यक्त कर रही थी जो उसे एक वास्तविक संभावना दिखाई दे रही थी। इसमें निहित खतरे के होते हुए भी, वह अपने लोगों को बचाने के लिए दृढ़ संकल्प थी।

आयत 17. मोर्दकै ने तब वही **किया** जो **एस्तेर** ने कहा था। ये आयतें एस्तेर के चरित्र में एक नया विकास चिन्हित करती हुई प्रतीत होती हैं। इस परिच्छेद से पहले, वह निष्क्रिय थी; यहाँ वह सक्रिय हो गई। जबकि इससे पहले वह औरों के कार्यों और निर्णयों के अधीन रहती थी, उसने अब पहल करना आरंभ कर दिया। अभी तक उसने मोर्दकै की आज्ञाओं का पालन किया था (2:10, 20); अब वह उसे आज्ञा दे रही थी और वह उसका पालन कर रहा था (4:17)। शेष संपूर्ण कहानी में वह प्रमुख पात्र रहती है। यह रोचक है कि आयत 8 में मोर्दकै ने उसके पास सन्देश भेजा उसे पालन करने की "आज्ञा देने" के लिए, परन्तु आयत 17 में मोर्दकै ने "एस्तेर की आज्ञा के अनुसार ही किया।" जॉयस जी. बौल्डविन ने इसे एस्तेर में परिवर्तन लाने वाला बिंदु देखा: "यहाँ से आगे एस्तेर, जिसने अब तक वैसा ही किया था जैसा मोर्दकै ने उससे कहा था, अब स्वयं पहल करती है और स्वयं अपने अधिकार को अपना लेती है।"[18]

इस प्रकार से इस अध्याय का अन्त एक अनिश्चितता के साथ होता है: एस्तेर राजा के पास जाएगी, किन्तु क्या वह जीवित बचेगी? क्या यहूदी बचाए जा सके? इन प्रश्नों के उत्तर बाद के अध्यायों में मिलते हैं।

अनुप्रयोग

एस्तेर का चरित्र (अध्याय 4)

जेम्स बर्टन कॉफमैन ने एस्तेर के चरित्र पर गुणकारी टिप्पणी की, उसमें निम्न गुणों के होने का उसे श्रेय दिया: (1) "अद्‌भुत साहस," (2) "मृत्यु के खतरे वाले कार्य को भी विश्वासयोग्यता सहित स्वीकार करना," (3) "उसके दत्तक-पिता समान प्रिय मोर्दकै के प्रति पारिवारिक आज्ञाकारिता," (4) "स्वदेश प्रेम तत्परता," (5) "अपने लोगों को संहार से बचाने का दृढ़ निर्णय," और (6) "परमेश्वर में तथा उसकी आशिषों में प्रगट विश्वास।" कॉफमैन ने आगे कहा, "यहाँ दिए गए एस्तेर के कार्य सभी देशों में मानव जाति के सबसे महान नायकों के तुल्य या उनसे बढ़कर हैं।"[19]

एस्तेर का साहस (अध्याय 4)

जब एस्तेर को राजभवन ले जाया गया, मोर्दकै ने उसे परामर्श दिया कि वह किसी को न बताए कि वह यहूदी है। परन्तु, यह जानने के बाद कि परमेश्वर के लोग संहार किए जाने का लक्ष्य बनाए जाए रहे हैं, मोर्दकै ने उससे कहा कि वह अपनी पृष्ठभूमि बता दे और अपने लोगों की सहायता करे। मार्क मनगानो ने इसे "एस्तेर का निर्धारिक पल" कहा, क्योंकि "उसका सामना अपनी पहचान को परमेश्वर के लोगों के साथ बताने से उस जीवन का दायित्व लेने से था जो परमेश्वर ने उसे दिया था।"[20]

भोज या उपवास (4:3, 16)

एस्तेर की पुस्तक में भोज के कई वृत्तान्त हैं। अध्याय 1 में, क्षयर्ष ने भोज का आयोजन किया, उसकी पत्नी वशती ने भी किया। 2:18 में राजा ने एस्तेर के रानी बनाए जाने के उपलक्ष्य में "बड़ा भोज" दिया। अध्याय 5 और 7 में, एक के बाद एक दिनों में एस्तेर ने राजा और हामान के लिए भोज आयोजित किया। अध्याय 8 के अनुसार, यहूदियों के लिए अपना बचाव करने की राजाज्ञा प्रकाशित होने के बाद उन्होंने उसे "भोज करके खुशी का दिन मनाया" (8:17)। फिर, अध्याय 9 में, यहूदियों की उनके शत्रुओं पर विजय के कारण पूरीम के पर्व की स्थापना हुई।[21]

यह पुस्तक उपवास के विषय भी कहती है। अध्याय 4 में यहूदियों ने हामान की राजाज्ञा के प्रति अपनी व्यथा को उपवास के द्वारा व्यक्त किया (4:3)। एस्तेर ने ईश्वरीय मार्गदर्शन और सुरक्षा पाने के लिए उपवास किया (4:16)। एस्तेर और मोर्दकै द्वारा बाद में दी गई एक आज्ञा में "उपवास" और "विलाप" के समयों का उल्लेख था (9:31)।

भोज और उपवास दोनों ही परमेश्वर का उसके लोगों के साथ भागीदारी होने को मानने की विधियाँ थीं। जब वे भोज करते थे (विशेषकर जब वे अपेक्षित वार्षिक पर्व मनाते थे), यहूदी कृतज्ञतापूर्वक वह स्मरण करते थे जो परमेश्वर ने उनके लिए किया था और आनन्द प्रगट करते थे कि वे उसके जन थे। जब वे उपवास करते थे,

तो वे अपनी समस्याओं के लिए शोक या विस्मय प्रगट करते थे या अपने पापों के लिए पश्चाताप प्रगट करते थे। दोनों ही स्थितियों में, उपवास सुझाता था कि वे अपने उद्देश्यों को अपने आप से पूरा नहीं कर सकते थे। वह परमेश्वर की सहायता ढूँढने की एक विधि थी, बहुधा ऐसी स्थिति में जो आशाहीन प्रतीत होती थी।

यहूदियों के लिए वर्ष में केवल एक उपवास का दिन आवश्यक था: उन्हें प्रायश्चित के दिन उपवास रखना होता था (लैव्य. 16:29, 31; 23:27, 29, 32[22])। बाद में बाबुल के निर्वासन के समय में, राष्ट्र ने (आवश्यक नहीं कि परमेश्वर की सहमति सहित) उस भयानक त्रासदी को स्मरण करने और उसके लिए विलाप करने के लिए उपवास स्थापित किए (जकर्याह 7:2-6; 8:19)। पुराने नियम में यह भी लिखा गया है कि वे अन्य अवसरों पर भी उपवास रखते थे, जैसा के यहूदियों ने एस्तेर की पुस्तक में रखा।

अधिकांश अच्छी बातों के समान, उपवास का भी दुरुपयोग हो सकता था। पुराने नियम के समय में, लगता है कि कुछ ने उपवास रखने को धार्मिकता का जीवन जीने के स्थान पर निर्वाह करना चाहा (यशा. 58:3-7)। नए नियम के समय में कुछ यहूदी ऐसा प्रदर्शन करते थे जिससे उन्हें मनुष्यों से प्रशंसा मिल सके। वे इस बात की भी डींग मारते थे कि वे कितनी बार उपवास रखते हैं (मत्ती 6:16-18; लूका 18:10-12)।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि जब तक वे उनके साथ हैं वे उपवास न रखें (इसलिए, शोकित भी न हों) (मत्ती 9:15), जिससे अभिप्राय था कि उनकी मृत्यु से उन्हें दुख होगा। यद्यपि उन्होंने उपवास करने के लिए कोई आज्ञा नहीं दी है, प्रतीत होता है कि उनकी अपेक्षा थी कि उनके शिष्य उपवास रखेंगे; इसलिए उन्होंने कहा कि वे इसका प्रदर्शन न करें (मत्ती 6:16-18)। प्रेरितों में कलीसिया की स्थापना के पश्चात, हम केवल दो अवसरों के विषय में पढ़ते हैं जब मसीहियों ने उपवास रखा (प्रेरितों 13:3; 14:23)। स्वेच्छा से किए जाने वाले उपवास के प्रचलन का पत्रियों में उल्लेख नहीं है।

आज कलीसिया में बहुधा "भोज" मनाने के कारण होते हैं। यीशु के आने से हमें इतनी बड़ी आशिषें मिली हैं कि हमारे पास आनंदित होने के अद्भुत कारण बने रहते हैं (फिलि. 4:4)! वास्तव में, दोनों ही, पृथ्वी पर की कलीसिया की (मत्ती 22:1-14) और उद्धार पाए हुओं के अनन्त निवास की, नए नियम में विवाह भोज से तुलना की गई है (प्रका. 19:9; 21:2)। प्रारंभिक कलीसिया, प्रभु भोज को प्रति सप्ताह लेने के अतिरिक्त, मेज़ की संगति में नियमित सम्मिलित होती थी; भाई लोग "प्रेम भोज" में साथ भोजन करते थे (यहूदा 12; देखें प्रेरितों 2:46)।[23] परमेश्वर ने जो अच्छी बातें हमें प्रदान की हैं, एक प्रेमी समुदाय का भाग होने के विशेषाधिकार सहित, हम उन सभी में आनन्दित हों, और साथ मिलकर भोज करें!

परन्तु, ऐसे अवसर भी हो सकती हैं जब कलीसिया को दूसरों की आवश्यकताओं के लिए, या महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, प्रार्थना में समय बिताने के लिए "उपवास" रखने की आवश्यकता हो। मण्डली जब किसी समस्या में हो तब उपवास रख सकती है, जब सदस्यों को यह बोध हो कि उन्होंने सामूहिक रीति से

पाप किया है, या जब मण्डली उनके प्रयासों के लिए परमेश्वर से विशेषतः आशिषें चाहती है। उदाहरण के लिए, अगुवे चुनने से पहले या नई योजनाओं के विषय निर्णय करने से पहले, कलीसिया के लिए प्रार्थना करना और उपवास रखना लाभप्रद हो सकता है, परन्तु इसे ऐसे करना चाहिए जिससे वह ध्यान आकर्षित नहीं करे (मत्ती 6:16-18)।

परमेश्वर या भाग्य? (4:14)

एक व्याख्याकर्ता, लिंडा डे, ने बल दिया कि "[अध्याय 4] की घटना में भाग्य प्रमुख विषय है। जैसे कि हामान ने यहूदियों के नाश की तिथि को भाग्य पर छोड़ दिया था (3:7), उसी प्रकार यहाँ मोर्दकै और एस्तेर भाग्य और संयोग की भाषा बोलते हैं।"[24] अपनी इस बात के लिए जो प्रमाण उन्होंने प्रस्तुत किया वह था कि मोर्दकै ने, परमेश्वर की उपस्थिति पर बल देने के स्थान पर कहा कि, "कौन जानता है ...?" (4:14)। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि पुराने नियम के अन्य खण्डों में, जिनमें बोलने वाले अथवा लेखक ने ऐसी ही भाषा का उपयोग किया "उन घटनाओं में स्पष्ट रूप से परमेश्वर की भूमिका का ध्यान होते हुए भी (2 शमूएल 12:22; योना 3:9; योएल 2:14)," जबकि मोर्दकै ने ऐसा नहीं किया।[25] अपनी व्याख्या में, उनका निष्कर्ष था कि, एस्तेर के लिए, "जीवन और मृत्यु, ईश्वर पर नहीं परन्तु भाग्य पर निर्भर थे।"[26]

पाठक को इसमें कोई संदेह नहीं होगा कि दोनों, मोर्दकै और एस्तेर, एक ही सच्चे परमेश्वर में विश्वास करने वाले जन थे (चाहे पुस्तक में उसका उल्लेख नहीं हुआ है)। परमेश्वर और सृष्टि के प्रति उन दोनों का, तथा यहूदियों का दृष्टिकोण भी एक ही होगा। संसार के प्रति उस दृष्टिकोण के अनुसार, संसार के कार्यों में, भाग्य की, यदि कोई भूमिका होती भी, तो वह बहुत ही गौण होती। मोर्दकै के शब्दों को, उसके समय तथा स्थान में, "*भाग्य* तुम्हें इस स्थान पर लेकर आया है" नहीं समझा जाता, वरन "*परमेश्वर* ने तुम्हें यह स्थान दिया है" समझा जाता। यहूदी के लिए जो कुछ भी होता है उसके पीछे परमेश्वर ही प्रमुख कारण है - वह चाहे अच्छा हो या बुरा, "प्राकृतिक" हो या मनुष्य द्वारा रचा गया, चाहे प्रत्यक्षतः उद्देश्यपूर्ण या आकस्मिक प्रतीत होने वाला। अन्य व्याख्याकर्ता भी इस वॉल्यूम के इस आंकलन के साथ सहमत हैं। उदाहरण के लिए कैरी ए. मूर ने कहा, "एस्तेर का लेखक एक धार्मिक धारणा की पुष्टि कर रहा है, ईश्वरीय कार्य में विश्वास ... मोर्दकै ने ... [एस्तेर] को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया यह कहने के द्वारा कि उसके रानी बनने में कुछ ईश्वरीय का हाथ था।"[27]

वह करना "जो नियम के अनुसार नहीं है" (4:16)

एस्तेर ने मोर्दकै की अनुनय-विनय को स्वीकार किया और निर्णय लिया कि वह राजा के समक्ष यहूदियों के पक्ष में हस्तक्षेप करेगी। ऐसा करने के लिए उसे राजा के सम्मुख, बिना बुलाए, उपस्थित होना था, जो फारस के नियमों में वर्जित था। उसने कहा "मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊँगी; और यदि नष्ट

हो गई तो हो गई” (4:16)।

आज मसीहियों से नियमों का पालन करने के लिए कहा गया है (रोमियों 13:1, 2; 1 पतरस 2:13-17)। क्या हमारे लिए कभी भी “जो नियम के अनुसार नहीं है” वह करना उचित हो सकता है?

1. हमारे लिए देश के नियमों को तोड़ना उचित है यदि नियम के पालन के द्वारा हम वह करेंगे जिसके लिए हमारा विवेक हमें मना करता है; अपने विवेक के विरुद्ध जाना सदैव ही पाप होता है (रोमियों 14:23)।

2. हमारे लिए देश के नियमों को तोड़ना उचित है यदि नियमों के पालन के द्वारा हम परमेश्वर के अनाज्ञाकारी होंगे (प्रेरितों 5:29)।

3. जैसा एस्तेर के लिए था, हम यह निर्णय कर सकते हैं कि नियमों को तोड़ना हमारे लिए उचित है, यदि उसके द्वारा हम कुछ बड़ी भलाई करते हैं। उसके लिए, नियम को तोड़ने का अर्थ था उसके लोगों का बचाया जाना। हमारे संसार में, ऐसी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं जिनमें मसीहियों को नियम तोड़ना आवश्यक लग सकता है, जिससे औरों के जीवन बचाए जा सकें।

यद्यपि नया नियम सिखाता है कि हमें देश के नियमों का पालन करना चाहिए, ऐसी परिस्थितियाँ होंगी जिनमें मसीही के लिए वह करना उचित होगा “जो नियम के अनुसार नहीं है।”

समाप्ति नोट्स

[1]लिंडा डे, *एस्तेर*, ऐबिंगडन ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (नैशविल्ले: ऐबिंगडन प्रैस, 2005), 79. [2]हेरोडोटस *हिज़्टोरीज़* 8.99. [3]जॉयस जी. बौल्डविन, *एस्तेर*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1984), 76-77. [4]एफ. बी. ह्यूए, जूनियर, “एस्तेर,” में *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एडिटर फ्रैंक ई. गेबेलियन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन पबलिशिंग हाउस, 1988), 815. [5]एनथोनी टोमासिनो, “एस्तेर,” में *ज़ॉनडरवैन इल्लस्ट्रेड बाइबल बैकग्राउंड्स कॉमेन्ट्री*, वॉल्यूम 3, *1 राजा 2 राजा, 1 & 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, एडिटर जौन एच. वॉल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन, 2009), 490. [6]एडेले बर्लिन, *एस्तेर*, द जेपीएस बाइबल कॉमेन्ट्री (फिलाडेल्फिया: ज्यूइश पब्लिकेशन सोसायटी, 2001), 46. [7]कैरल एम. बेकटेल, *एस्तेर*, इंटरप्रेटेशन (लुइविल्ले: जौन नौक्स प्रैस, 2002), 46. [8]बर्लिन, 46; डे, 80. [9] बेकटेल, 46. [10]यह तथ्य कि “कितनी चांदी भर देने” के प्रस्ताव का उल्लेख किया गया सुझाता है कि, राजा का उसे अस्वीकार करना प्रतीत होने के बाद भी, वास्तविकता में उसने हामान के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था (3:11 पर टिप्पणियाँ देखें)।

[11]माता-पिता की, या दत्तक माता-पिता की दृष्टि में, बच्चे कभी इतने बड़े या महत्वपूर्ण नहीं हो जाते हैं कि उन्हें यह न कहा जा सके कि क्या करना है। [12]हेरोडोटस *हिज़्टोरीज़* 1.99; 3.118, 140. [13]एक फारसी राजा का सिंहासन पर राजदंड लिए हुए बैठे होने का चित्र जेम्स बी. प्रिट्चर्ड, के *द एन्शियंट नियर ईस्ट इन पिक्चर्स रिलेटिंग टू द ओल्ड टेस्टामेंट*, 2ड एड. (प्रिंसटन, न्यू जर्सी: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969), 159 (नंबर 463) में मिलता है। [14]पाठक को यह ध्यान रखना चाहिए कि राजा का बड़ा हरेम था। उसे अपनी यौन लालसाओं या अपने हरेम की अन्य स्त्रियों के साथ संगति करने की आवश्यकताओं को पूरा करने में ओई समस्या नहीं होती होगी। [15] ह्यूए, 817; देखें जोसेफस *एंटीक्विटीस* 11.6.7. [16]क्लेटन विंटर्स, *कॉमेन्ट्री ऑन एज्रा-नहेम्याह-एस्तेर* (एबीलीन, टेक्सस: क्वालिटी पब्लिकेशंस, 1991), 183. [17]बौल्डविन ने कहा, “बिना स्पष्ट विवरण प्रदान किए कि वह

किस आधार पर अपने दृढ़ मत पर पहुँचा, मोर्दकै प्रगट करता है कि वह परमेश्वर में, परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत जीवनों का मार्गदर्शन करने में, और परमेश्वर द्वारा सँसार के राजनैतिक घटनाक्रम का संचालन करने में, विश्वास करता है, इस बात का ध्यान किए बिना कि जनके पास सत्ता है वे उसे स्वीकार करते हैं या नहीं" (बौल्डविन, 80). [18]उपरोक्त, 81. [19]जेम्स बर्टन कॉफमैन एंड थेलमा बी. कॉफमैन, *कॉमेन्ट्री ऑन एज्रा, नहेम्याह एंड एस्तेर* (एबीलीन, टेक्ससः एसीयू प्रैस, 1993), 282. [20]मार्क मनगानो, *एस्तेर एंड डैनिय्येल*, द कॉलेज प्रैस एनआईवी कॉमेंट्री (जोपलिन, मिसौरीः कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 77.

[21]इस अनुप्रयोग का अधिकांश भाग बौल्डविन, 81-85 में "एड्डिशनल नोटः फास्टिंग," पर आधारित है। और अधिक जानकरी एक अन्य अनुप्रयोग जिसका शीर्षक है "व्हेन फास्टिंग बिकेम अननेसेसरी" कोय डी रोपर के, *द माइनर प्रोफेट्स, 3: ज़कर्याह एंड मलाकी; द इन्टरटेस्टामेंटल पीरियड*, ट्रुथ फॉर टुडे कमेन्ट्री (सरसी, अरकेंसाः रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2013), 132-37 में मिलती है। [22]इन खण्डों में, अभिव्यक्ति "अपने जीव को दुःख देना" या "अपना इन्कार करना" (NIV) उपवास को दर्शाती है (देखें भजन 35:13). [23]इन संगति के भोजों के उल्लेख/संदर्भ के लिए 1 कुरिन्थियों 11:20-34 देखें। कोरिन्थी इन अवसरों का दुरुपयोग कर रहे थे, "प्रेम भोजों" को प्रभु भोज के साथ गलत समझने के द्वारा भाईयों में विभाजन उत्पन्न कर रहे थे। [24]डे, 92. यह संदेहास्पद है कि हामान ने यहूदियों के विनाश की तिथि को "संयोग/भाग्य" पर छोड़ दिया। वह विधर्मी देवताओं से यहूदियों के संहार के लिए सबसे उपयुक्त तिथि माँग रहा था। [25]उपरोक्त. किन्तु, यह तथ्य कि "कौन जानता है ... ?" जो अन्य सन्दर्भों में प्रत्यक्षतः परमेश्वर की ओर संकेत करता है इस धारणा के पक्ष में तर्क प्रदान करता है कि मोर्दकै एस्तेर के रानी बनने में परमेश्वर के संलग्न होने को देखता था। [26]उपरोक्त। [27]कैरी ए. मूर, *एस्तेर*, द ऐंकर बाइबल, वॉल्यूम 7बी (न्यू यॉर्कः डबलडे & कम्पनी, 1971), 50.